International Journal of Home Science 2019; 5(1): 67-68

International Journal of Home Science

ISSN: 2395-7476
IJHS 2019; 5(1): 67-68
© 2019 IJHS
www.homesciencejournal.com
Received: 13-11-2018
Accepted: 16-12-2018

लक्ष्मी मधुर माला
राम कृष्ण धर्माथ फाउण्डेशन विश्वविद्यालय, भोपाल, मध्य प्रदेश, भारत

नीलमा कुँवर
पर्वेक्षक, चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर, उत्तर प्रदेश, भारत

Correspondence
लक्ष्मी मधुर माला
राम कृष्ण धर्माथ फाउण्डेशन विश्वविद्यालय, भोपाल, मध्य प्रदेश, भारत

बालक एवं बालिकाओं के नैतिक स्तर पर अनुशासन का प्रभाव

लक्ष्मी मधुर माला एवं नीलमा कुँवर

सारांश
जीवन में अनुशासन एक महत्वपूर्ण तथ्व होता है, ये एक ऐसी प्रवृत्ति है जो व्यक्ति को सफलता के साथ–साथ ऊँचाई तक पहुँचाती है। अनुशासन ही वह सीढ़ी है जिसपर पेर रखकर इंसान सफलता की बुलन्दियों को छू सकता है। बालकों में अनुशासन का महत्व इसलिए भी अधिक बढ़ जाता है कि यदि वे अनुशासनबद्ध नहीं रहेंगें तो उनके सभी कार्य आधे–अधूरे रह जायेंगें इसलिए माता–पिता और शिक्षक बालकों में सर्वप्रथम अनुशासन पालन की आदत डालते हैं। अनुशासन में रखने की कई तकनीकें हैं ये भिन्न–भिन्न तकनीकें बालक के व्यक्तित्व तथा व्यवहार को प्रमाणित करती हैं। उचित अनुशासन के द्वारा बालक में अच्छी आदतें तथा उनका नैतिक विकास किया जा सकता है।

कुटशब्दः अनुशासन, नैतिक स्तर

प्रस्तावना
अनुशासन का उद्देश्य बालक को यह सिखाना है कि वह जिस समूह में रहता है या उससे संबंधित है उसमें क्या सही है क्या गलत है, इसके पश्चात यह देखना कि वह इस ज्ञान के अनुसार व्यवहार एवं क्रिया करे। यह कार्य सर्वप्रथम उनके व्यवहार पर बाह्य नियंत्रण द्वारा एवं बाद में आन्तरिक नियंत्रण द्वारा जब स्वयं के व्यवहार का उत्तरदायित्व ग्रहण कर लेते हैं, के द्वारा किया जाता है। बाल्यावस्था में शिशुओं को घर–परिवार तथा पड़ोस मे विशिष्ठ परिस्थितियों में शुद्ध–सही विशिष्ठ प्रतिक्रियायें करना सीखना चाहिए, जो कार्य गलत हैं, वह हर समय गलत ही होना चाहिए बिना इस तथ्य के कि यह कार्य किसने किया है, अन्यथा शिशु भृमित हो जायेगा तथा वह नहीं जान पाएगा कि उससे क्या अपेक्षा की जाती है। छोटे बच्चों को भी कठोर अनुशासन द्वारा जिसमें गलत बातों व व्यवहार के लिए दण्ड भी शामिल है, के व्यवहार का तरीका विकसित किया जा सकता है, जिससे उन्हें माता–पिता के लिए उपद्रवी या उत्पाती होने से बचाया जा सकता है, दण्ड देने से पूर्व बालक को यह ज्ञात होना चाहिए कि उन्हें किस गलती, उदण्डता या अनुशासनहीनता के लिए सजा दी जा रही है।

अध्ययन के उद्देश्य
1. उत्तर बाल्यावस्था के बालक एवं बालिकाओं के नैतिक स्तर का अध्ययन करना।
2. उत्तर बाल्यावस्था के बालक एवं बालिकाओं के अनुशासनात्मक व्यवहार तथा नैतिक स्तर एवं अनुशासन में सम्बन्ध ज्ञात करना।

अध्ययन पद्धति
उत्तर प्रदेश के फैजाबाद (अयोध्या) जिला का चयन किया गया है। इसमें अयोध्या जिले के शासकीय और अशासकीय विद्यालयों का चयन जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी द्वारा की गयी सूची से किया गया है। इसमें कुल 300 बालक–बालिकाओं (150 बालक एवं 150 बालिकायें) का चयन किया गया है इसमें मनोवैज्ञानिक परीक्षण उपकरण Alpana Sengupta and Arun Kumar – Moral Values Scale (MVS) और R.I. Bharadwaj – Socio-economic Status Scale लगाये गये हैं जिसमें सांख्यिकीय उपकरण मध्यमान एवं प्रामाणिक विचलन का इस्तेमाल किया गया है।

परिणाम

सारिणी 1: अभिभावकों के शैक्षणिक स्तर के आधार पर वर्गीकरण

लिंग/अभिभावक	उच्च शिक्षा स्तर		हायर सेकेन्ड्री स्तर		निम्न शैक्षणिक स्तर		योग	
	आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत
बालक								
माता	82	54.67	40	26.66	28	18.67	150	50.0
पिता	90	60.00	35	23.33	25	16.67	150	50.0
बालिका								
माता	98	65.33	40	29.67	12	8.00	150	50.0
पिता	105	70.00	39	26.00	6	4.00	150	50.0
योग	375	62.50	154	25.67	71	11.83	600	100.0

उक्त तालिका अभिभावकों का शैक्षणिक स्तर प्रदर्शित करती है जिसमें कुल 375 (62.50 प्रतिशत) अभिभावक उच्च शिक्षित, 154 (25.67 प्रतिशत) अभिभावक हाई स्कूल एवं 71 (11.53 प्रतिशत) अभिभावक निम्न शैक्षिक स्तर को दिखाते हैं। माता–पिता की शिक्षा का बालकों के नैतिक विकास व व्यक्तित्व विकास पर व्यापक असर पड़ता है।

सारिणी 2: उत्तर बाल्यावस्था के बालकों के नैतिक स्तर एवं अनुशासन के मध्य विभाजन संख्या=300

टनुशासन	उच्च		मध्यम		निम्न		योग	
	आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत
उच्च	30	58.82	20	39.21	1	1.97	51	34.00
मध्यम	50	84.74	8	13.55	1	1.69	59	39.33
निम्न	20	50.00	13	32.50	7	17.50	40	26.67
योग	100	66.67	41	27.33	9	6.00	150	100.00

तालिका के विश्लेषण से स्पष्ट है कि कुल 150 बालकों के नैतिक स्तर एवं अनुशासन के मध्य संबंध देखने पर उच्च अनुशासन में उच्च नैतिक स्तर के 58.82 प्रतिशत बालक, मध्यम नैतिक स्तर के 39.21 प्रतिशत बालक एवं निम्न नैतिक स्तर के 1.97 प्रतिशत बालक, मध्यम अनुशासन में उच्च नैतिक स्तर के 84.74 प्रतिशत बालक, मध्यम नैतिक स्तर के 13.55 प्रतिशत बालक एवं निम्न नैतिक स्तर के 1.69 प्रतिशत बालक एवं निम्न अनुशासन में उच्च नैतिक स्तर के 50.00 प्रतिशत बालक, मध्यम नैतिक स्तर के 32.50 प्रतिशत बालक एवं निम्न नैतिक स्तर के 17.50 प्रतिशत बालक पाये गये।

तालिका 3: उत्तर बाल्यावस्था के बालकों के नैतिक स्तर एवं अनुशासन के मध्य सार्थकता का स्तर

लिंग	उच्च	मध्यम	निम्न	योग	काई वर्ग का मान	स्वातंत्रय के अंश; कद्धि	काई वर्ग का तालिका मान
उच्च	30	20	1	51			
मध्यम	50	8	1	59	24.28	4	13.27
निम्न	20	13	7	40			
योग	100	41	9	150			
P = < 0.01 स्तर उच्च सार्थक							

उपरोक्त तालिका 5.33 के अनुसार नैतिक स्तर एवं अनुशासन के मध्य सार्थक सम्बंध देखने पर ज्ञात हुआ कि समस्त 51 उच्च अनुशासन के बालकों में से उच्च नैतिक स्तर के 30 बालक, मध्यम नैतिक स्तर के 2. बालक एवं निम्न नैतिक स्तर का 1 बालक, 59 मध्यम अनुशासन में उच्च नैतिक स्तर के 50 बालक, 08 बालक मध्यम नैतिक स्तर के, 1 बालक निम्न नैतिक स्तर का एवं 40 निम्न अनुशासन में 20 बालक उच्च नैतिक स्तर के, 13 बालक मध्यम नैतिक स्तर के, 7 बालक निम्न नैतिक स्तर के पाये गये। इनकी विभिन्नता के मध्य 24.28 काई मान प्राप्त हुआ जो कि 0.01 स्तर पर अपनी उच्च सार्थकता अभिव्यक्त करता है।

निष्कर्ष

आज के समय में बालकों के नैतिक विकास पर मानसिक स्वास्थ्य का असर अवश्य पड़ता है। साथ ही बच्चों पर अनुशासन का प्रभाव पड़ता है। जिन बालकों के माता–पिता अपने बच्चों को अनुशासन में रखते हैं उनका नैतिक विकास तो अच्छा होता ही है तथा वह आगे चलकर समाज में आचरण की मिसाल प्रस्तुत करता है। जिन बालकों का नैतिक विकास उच्च होगा उनका मानसिक संतुलन भी ठीक होगा इसलिए बच्चों का नैतिक विकास करना अति आवश्यक है।

सुझाव

बच्चों को पढ़ाई के साथ–साथ महापुरूषों के बारे में भी पढ़ाना चाहिए जैसे कि स्वामी विवेकानन्द, महान संत तुलसीदास जी, संत कबीर आदि इससे बच्चों पर उनके संस्कारों का असर पड़ता है।

संदर्भ

1. Okioga CK. The impact of students' socio-economic background on academic performance in Universities, a Case of students in Kisii University College. American International Journal of Social Science. 2013; 22(2):38. www.aijssnet.com
2. Conger RD, Conger KJ, Martin MJ. Socio-economic status, family processes and individual develop. J Marriage Fam. 2010; 72(3):685-704. Doi; [10.1111/j.174-3737.2010.00725.x